International Journal of Sanskrit Research 2020; 6(5): 146-147

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2020; 6(5): 146-147
© 2020 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 14-07-2020
Accepted: 17-08-2020

रवि शेखर आजाद
एस0 के0 एम0 विश्वविद्यालय,
दुमका, झारखण्ड, भारत

पुराणेषु प्रतिपादित मानवतावादः

रवि शेखर आजाद

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2020.v6.i5c.1126

प्रस्तावना

भूमण्डलीकरण की इस दुनिया में बढ़ती हुई वैमनस्यता संपूर्ण विश्व को अंधकारमय बनाता हुआ दृष्टिगोचर होता है। सम्प्रति देश–देश के प्रति, समाज–समाज के प्रति, मानव–मानव के प्रति, सामरिक शक्ति में श्रेष्ठता दिखाने का प्रयास मानव कर रहा है, जिससे मानवता का ह्रास होता हुआ आलोकित होता है। वस्तुतः मनुष्य स्वयं के प्रति अनुकूलता जैसा संकुचित विचार का परित्याग कर समस्त मानव समाज के प्रति अनुकूलत्व में विश्वास रखना हीं मानवता है।

संम्पूर्ण संस्कृत वाङ्मय ने केवल भारत और भारतीयों के लिए नहीं, अपितु अखिल ब्रह्माण्ड के लिए मानवता का मार्ग प्रशस्त किया है, जो समस्त जीवों की कल्याण की कामना करता है।

सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।
सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चित् दुःखभाग् भवेत्।।

वेद का उद्घोष है मनुर्भवः[1]– मनोरपत्यम् अण्[2] अर्थात् मानव या मनुष्य बनो अथवा मननशील, चिंतनशील बनो। विश्व में शांति, संतुलन के साथ–साथ मनुष्य जन्म को सार्थक करने हेतु मानव में मानवीय गुणों का यथोचित सन्निवेष मानवता है। मानवता शब्द तस्य भावस्त्व– तलौ[3] सूत्रेण मानव+तल् प्रत्यय के प्रकृतिजन्य बोधे प्रकारः भावः मानवता के अर्थ में व्युत्पन्न हुआ। यथा–प्रेम, दया, अहिंसा, क्षमा सहनशीलता आदि। वाद यानि सिद्वांत अथवा विचारधारा। अतः मानवतावाद, मानव कल्याण को सर्वोपरि माननेवाला तथा मानवीय मूल्यों का सम्यक् दृष्टिको

संस्कृत वाङ्मय की अर्थप्रधानशैली में वर्णित 'पुरा नवं भवति[4] इति पुराणम् ऐसे अतुलनीय ग्रंथ हैं, जिसमें अनेक ऐसे तथ्य उद्धृत हैं, जो मानवता को प्रतिस्थापित करते हैं। पुराणों की संख्या का वर्णन करते हुए महर्षि वेदव्यास ने 'परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम[5] युक्ति जो विश्व को प्रदान की है, उसके वगैर मानवता की कल्पना कदापि नहीं की जा सकती है।

न ताड़यति नो हन्ति प्रणिनोन्यांश्च देहिंनः।
यो मनुष्यो मनुष्येंद्र तोष्यते तेन केशवः ।।[6]

जो मनुष्यकिसी प्राणी अथवा अन्य देहधारियों को पीड़ित अथवा नष्ट नही करता उससे माधव संतुष्ट रहते है। एक गर्भभ्रष्ट मृगबाला को राजा भरत के द्वारा नदी की तरंगमालाओं में पड़कर बहते हुए बचाना मानवता की ओर इंगित करता हैं।

तमूह्यमानं वेगेन वीचिमालापरिप्लुतम् ।
जग्राह स नृपो गर्भात्पतितं मृगपोतम् ।।[7]

अतएव धर्मविरूद्य अर्थ और काम दोनो का त्याग कर देना चाहिए, साथ हीं ऐसे धर्म का आचरण न करें, जो दुःखमय अथवा समाज विरूद्य हो। मनुष्य को स्वयं अपने और अपने पुत्रों के सामान हीं समस्त प्राणियों की चिंता करनी चाहिए।

परित्यजेदर्थकामौ धर्मपीडाकरौ नृप ।
धर्ममप्यसुखोदर्कं लोकविद्विष्टमेव च।।[8]

Corresponding Author:
रवि शेखर आजाद
एस0 के0 एम0 विश्वविद्यालय,
दुमका, झारखण्ड, भारत

यथात्मनि च पुत्रे च सर्वभूतेषु यस्तथा।
हितकामो हरिस्तेन सर्वदा तोष्यते सुखम्।।[9]

जो लोग सद्धर्म की अभिलाषा करते हैं, उनके लिए इससे बढ़कर कोई धर्म नही है कि किसी भी प्राणी को मन, वाणी और शरीर से किसी प्रकार का कष्ट न दिया जाए। किसी भी प्राणी की हिंसा नही करनी चाहिए साथ ही कदापि झूठ नहीं बोलना चाहिए, जिससे मानवता की भावना में न्यूनता आए। अतएव सौहार्दवश अपने दुःख के समान ही दूसरों के दुःख के प्रति करूणभाव रखना चाहिए।

नैतादृशः परो धर्मो नृणां सद्धर्ममिच्छताम्।
न्यासो दण्डस्य भूतेषु मनोवाक्कायजस्य यः।।[10]
न हिंस्यात् सर्वभूतानि नानृतं वा वदेत् क्वचित्।'[11]
स्वदुःखेष्विव कारूण्यं परदुःखेषु सौहृदात् ।[12]
आत्मनः पुत्रवत् पश्यैत्तैरेषामन्तरं कियत्।।[13]

जो मनुष्य द्वेष करते हैं, उन्हें प्रतिमा उपासना करने पर भी सिद्वि नहीं मिल सकती।

ततोर्चायां हरिं केचित् संश्रद्धाय सपर्यया।
उपासत उपास्तापि नार्थदा पुरूष द्विषाम्।।[14]

अतएव संस्कृत वाङ्मय में वर्णित मानवतावाद उसकी दूरदर्शिता को आलोकित करता है। अतः मानवता के लिए मनुष्यो में आत्मसंतुष्टि परमावश्यक है। जिस प्रकार पैरों में जूता पहनने के पश्चात् चलने के दौरान कंकड़ कांटे इत्यादि से कोई डर नही होता, उसी प्रकार आत्मसंतुष्टि होने पर उसे कदापि दुःख नहीं होता है उसे सुख हीं सुख की अनुभूति होता है। इस प्रकार का मनुष्य सामाज में मानवतावाद को आलोकित कर सकता है तथापि सामाज एवं राष्ट्र के लिए अमूलनिधि हैं।

सन्दर्भ सूची

1. ऋग्वेद – 10/43/6
2. संस्कृत हिंदी शब्दकोश पृष्ट सं0 794
3. लघुसिद्धांतकौमुदी' सुत्र संख्यां 1153 पृष्ट सं0 968
4. निरूक्त 3/19
5. अष्टादशपुराणेषु व्यासस्य वचनद्वयम्।
   परोपकारः पुण्याय पापाय परपीडनम्।।
6. विष्णु पुराण 3/8/15
7. विष्णु पुराण–2/13/16
8. विष्णु पुराण–3/11/7
9. विष्णु पुराण – 3/8/17
10. भागवत पुराण 7/15/18
11. कुर्म पुराण 16/35 (उपरि विभाग) (गीता प्रेस)
12. कुर्म पुराण 15/31
13. भागवत पुराण 7/14/40